(अव्यक्त इशारे)

संस्कार मिलन की रास करो

1) बापदादा समय की समीपता प्रमाण अभी संस्कार मिलन की महारास देखना चाहते हैं, इसके लिए पहले स्वयं को एडजेस्ट कर दूसरों से संस्कार मिलाने का दृढ़ संकल्प करो। एडजेस्ट करने की शक्ति संस्कारों को मिला देगी।

2) बापदादा से तो मिलन मनाते हो लेकिन बड़े से बड़ा मिलन है आपस में संस्कारों का मिलन। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी, इसके लिए मधुरता के गुण को धारण करो। कटाक्ष के बोल वा कटु बोल नहीं बोलो।

3) वर्तमान समय स्वयं को शमा पर इतना मिटा देना है जो यह शब्द भी समाप्त हो जाए कि यह मेरे संस्कार हैं, यह मेरी नेचर है। जब हरेक की नेचर बदलेगी तब आपके अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे। जैसे मिलन में हाथ मिलाते हैं, यह मिलन है संस्कार मिलन – अगर सबके संस्कार एक समान हो जाएं तो एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जायेगी।

4) जैसे बाप के संस्कार सदा उदारचित, कल्याणकारी, निःस्वार्थ, रहमदिल, परोपकार आदि हैं। ऐसे आप बच्चों के भी संस्कार हो। सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी बन, संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। संस्कारों को मिलाना अर्थात् सम्पूर्णता को और समय को समीप लाना।

5) जैसे होली पर लोग आपस में गले मिलते हैं, ऐसे यहाँ संस्कार मिलन ही मंगल मिलन है। एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना है। जैसे कोई से विशेष स्नेह होता है तो उनसे मिक्स हो जाते हो, ऐसे एक दो में मिक्स होने के लिए जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव वाले बनो।

6) एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। लेकिन ध्यान रहे आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर नहीं हो। नहीं तो डगमग होते रहेंगे। कई बच्चे जब कुछ करते हैं तो उसके फल की इच्छा रखते हैं। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है, अगर कोई निंदा कर देता है तो निधनके बन जाते हैं, अपनी स्टेज को छोड़ एक दो से किनारा कर लेते हैं। लेकिन स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहे तो संस्कार टकरायेंगे नहीं।

7) संस्कार मिलाने के लिए जहाँ मालिक हो चलना है वहाँ बालक नहीं बनना और जहाँ बालक बनना है वहाँ मालिक नहीं बनना। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प। जो भी आज्ञा मिले, डायरेक्शन मिले उस पर चलना। मालिक बन अपनी राय दो फिर बालक बन जाओ तो टकराव से बच जायेंगे। राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

8) मन में जब कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें सच्चाई और सफाई चाहिए। अन्दर में कोई भी भाव - स्वभाव, पुराने संस्कारों वा विकर्मो का किचड़ा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वही सच्चा होगा और जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले वह प्रभु प्रिय होगा, फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। संस्कारों की टक्कर से बच जायेगा।

9) यह देह रूपी वस्त्र किसी भी संस्कार से लटका हुआ न हो। जब सभी पुराने संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जायेगी इसलिए सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे और पुरुषार्थ भी इज़ी होगा।

10) बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए विशेष दो बातें ध्यान में रखनी हैं - एक सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी। इसके लिए हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी शीतल हो जायेगा। दूसरा - सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। जब यह दोनों बातें सदा ध्यान पर रहें तब बाप जो है जैसा है, वैसा दिखाई दे और प्रत्यक्षता हो।

11) सदैव यही कोशिश करनी है कि मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हों। यह है ब्राह्मण कुल की रीति। संस्कारों को मिलाने के लिए दिलों का मिलन करना पड़ेगा, इसके लिए कुछ भुलाना पड़ेगा, कुछ मिटाना और कुछ समाना पड़ेगा। यह मेरे संस्कार हैं, यह शब्द भी मिट जाये। इतने तक मिटना है जो पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बन जाये।

12) संस्कार मिलन की रास करने के लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो। अगर स्वीकार करना और सत्कार देना, यह दोनों ही बातें आ जाएं तो सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जायेंगी। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण संस्कार वाला बना लेंगे तब समाप्ति होगी।

13) जितना आपस में संस्कारों को समानता में लायेंगे उतना ही समीप आयेंगे। जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा के रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे और जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।

14) जितना एक दो के समीप आते जा रहे हो उतना एक दो को सम्मान देते चलो। जितना सम्मान देंगे उतना सारी विश्व आप अभी का सम्मान करेगी, सम्मान देने से सम्मान मिलेगा और सम्मान देने से संस्कार मिलन भी सहज हो जायेगा।

15) यदि आपको कभी कोई का विचार स्पष्ट नहीं लगता है तो भी ना कभी नहीं करनी चाहिए। शब्द सदैव हाँ जी निकलना चाहिये। समय को देखकर इशारा दे सकते हो, अगर उसी समय ना कहकर कट करेंगे तो संस्कार टकरायेंगे, इसलिए हाँ जी कर धरनी बनाओ,

फिर समय देख इशारा दो, यही विधि है संस्कार मिलन की।

16) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव - संस्कार वाले। मैजारिटी 95 परसेन्ट के दिलपसन्द जरूर हो। दिलपसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। हर बोल, कर्म और वृत्ति से वह हल्कापन अनुभव हो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें, इसके लिए सहनशक्ति धारण करो। भल कोई किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को भी सहयोग दो। कोई का हद का संस्कार प्रभावित न करे।

17) कोई भी माला जब बनाते हैं तो एक दाना दूसरे दाने से मिला हुआ रहता है। वैजयन्ती माला में भी चाहे कोई 108 वां नम्बर हो लेकिन दाना दाने से मिला होता है। तो सभी को यह महसूसता आये कि यह तो माला के समान पिरोये हुए मणके हैं। वैरायटी संस्कार होते भी समीप दिखाई दें।

18) एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना - यह माला के दानों की विशेषता है। लेकिन एक दो के स्नेही तब बनेंगे जब संस्कार और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे, इसके लिए सरलता का गुण धारण करो।

19) 19) सर्विस में सफलता का आधार है नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। नम्रता के गुण से सब नमन करते हैं। जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं इसलिए शरीर को निमित्त मात्र समझकर चलो और सर्विस में अपने को निमित्त समझकर चलो तब नम्रता आयेगी। जहाँ नम्रता है वहाँ टकराव नहीं हो सकता। स्वतः संस्कार मिलन हो जायेगा।

20) संस्कार मिलन की रास करने के लिए अपनी नेचर को इज़ी और एक्टिव बनाओ। इजी अर्थात् अपने पुरुषार्थ में, संस्कारों में भारीपन न हो। इज़ी है तो एक्टिव है। अगर खुद इज़ी नहीं बनते हैं तो मुश्किलातों का सामना करना पड़ता है। फिर अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं।

21) बापदादा बच्चों को विश्व महाराजन बनाने की पढ़ाई पढ़ाते हैं। विश्व महाराजन बनने वाले सर्व के स्नेही होंगे। जैसे बाप सर्व के स्नेही और सर्व उनके स्नेही हैं, ऐसे एक-एक के अन्दर से उनके प्रति स्नेह के फूल बरसेंगे। जब स्नेह के फूल यहाँ बरसेंगे तब जड़ चित्रों पर भी फूल बरसेंगे। तो लक्ष्य रखो कि सर्व के स्नेह के पुष्प पात्र बनें। स्नेह मिलेगा सहयोग देने से।

22) मधुरता आने के बाद ही संस्कारों का मिलन होता है। भिन्न-भिन्न संस्कारों के कारण ही एक दो से दूर होते हो लेकिन जब वाणी में मधुरता (मिठास) आ जाती है तो फिर संस्कार मिलन की रास होने लगती है। जब संस्कार मिलन का सम्मेलन हो तब जयजयकार होगी।

23) किसी के स्वभाव अथवा संस्कारों को देख किनारा करना, यह भी घृणा अर्थात् क्रोध का ही अंश है। इसका रॉयल शब्द है - अपनी अवस्था को खराब करें इससे किनारा करना अच्छा है। लेकिन न्यारा बनना और चीज़ है, किनारा करना और चीज़ है। प्यारे बन न्यारे

बनते हो, वह राइट है। लेकिन सूक्ष्म घृणा भाव '"यह ऐसा है, यह तो बदलना ही नहीं है।" ऐसे सदा के लिए उसको सूक्ष्म में श्रापित करते हो। खुद सेफ रहो लेकिन दूसरों को फाइनल सर्टीफिकेट नहीं दो।

24) सदा याद रखो "मुझे अपने को बदलना है' स्थान को वा दूसरे को नहीं। इसके लिए सहनशीलता का अवतार बन जाओ। अपने को एडजेस्ट करो | किनारा नहीं करो। कोई बिल्कुल एन्टी है उस पर भी अपनी शुभ भावना का फुल फोर्स से ट्रायल करो, समय भल लगे सफलता अवश्य मिलेगी और आपको विजयी माला का दाना बना देगी।

25) जैसे दूसरों के संस्कारों को साक्षी होकर देखते हो वैसे अपने तमोप्रधान स्टेज के संस्कारों को भी साक्षी होकर देखो और समाप्त करो। अनुभव करो जैसे यह संस्कार स्वाहा हो रहे हैं, ऐसा समझने से ही सदा सफलता को पाते रहेंगे।

26) संस्कार तो भिन्न-भिन्न होते ही हैं और होंगे भी लेकिन संस्कारों को टकराना या किनारा करके स्वयं को सेफ रखना, यह अपने ऊपर है। कुछ भी हो जाता है तो अगर कोई का संस्कार ऐसा है तो दूसरा ताली नहीं बजावे। चाहे वह बदलते हैं या नहीं बदलते हैं लेकिन आप तो बदल सकते हो ना। अगर हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा।

27) किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं। जब संस्कार बापदादा के समान बन जायेंगे तो बापदादा के स्वरूप सभी को देखने में आयेंगे। जैसे बापदादा वैसे - हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव होंगे। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वही लगते हैं।

28) जो भी बात सामने आये तो यह लक्ष्य रखो कि एक सेकेण्ड में बदल जाये। जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय बन जाये। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदत न रहे। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही लक्ष्य रखो कि हमारी चलन से कोई को भी दुःख न न हो।

29) अभी बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज सभी में समानता का मेला मनाओ। जब आप बाप की समानता का मेला मनायेंगे तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आयेंगे। बाप की समानता ही विनाश को समीप लायेगी।

30) जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वालास्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्जवलित करो जिसमें सभी आसरी कलियुगी संस्कार जलकर भस्म हो जायें तब संस्कार मिलन की रास होगी और नया संसार आयेगा।